बच्चों की हिकायात

(हिस्सा 1)

नूर का खिलौना

Noor ka Khilona (Hindi)

- कसरत से दुरूदे पाक पढ़ने वाली बच्ची
- छोटी मुसीबत ने बड़ी मुसीबत से बचा लिया
- म-दनी मुन्ने का जोशे ईमानी
- म-दनी मुन्ने का रोना काम आ गया !
- कमसिन मुबल्लिग़ की इन्फ़िरादी कोशिश
- बाबुल मदीना(कराची) का चौक साफ़ रखने वाला म-दनी मुन्ना

मक-त-बतुल मदीना
(दा'वते इस्लामी)
सिलेक्टेड हाउस, अलिफ़ की मस्जिद के सामने, तीन दरवाज़ा
अहमदआबाद-1. गुजरात, इन्डिया Ph:91-79-25391168
E-mail:maktabahind@gmail.com, www.dawateislami.net

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ، وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِالْمُرْسَلِيْنَ ، اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْم ، بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْم ،

किताब पढ़ने की दुआ

अज़: शैख़े त़रीक़त अमीरे अहले सुन्नत बानिये दा'वते इस्लामी, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार** क़ादिरी रज़वी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه

दीनी किताब या इस्लामी सबक़ पढ़ने से पहले ज़ैल में दी हुई दुआ पढ़ लीजिये اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ जो कुछ पढ़ेंगे याद रहेगा। दुआ येह है

اَللّٰهُمَّ افْتَحْ عَلَيْنَا حِكْمَتَكَ وَانْشُرْ
عَلَيْنَا رَحْمَتَكَ يَا ذَاالْجَلَالِ وَالْاِكْرَام

तर्जमा : ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! हम पर इ़ल्मो ह़िक्मत के दरवाज़े ख़ोल दे और हम पर अपनी रह़मत नाज़िल फ़रमा ! ऐ अ़-ज़मत और बुज़ुर्गी वाले।

(अल मुस्तत़रफ़, जिल्द:1, स.40, दारुल फ़िक्र बैरूत)

नोट : अव्वल आख़िर एक एक बार दुरूद शरीफ़ पढ़ लीजिये।

त़ालिबे ग़मे मदीना
व बक़ीअ़
व मग़्फ़िरत

13 शव्वालुल मुकर्रम सि. 1428 हि.

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ، وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِالْمُرْسَلِيْنَ ، اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْم ، بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْم ،

कसरत से दुरूदे पाक पढ़ने वाली बच्ची

एक मर्तबा हज़रते शैख़ मुहम्मद बिन सुलैमान जज़ूली رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه वुज़ू करने के लिये एक कूंएं पर गए मगर उस से पानी निकालने के लिये कोई चीज़ पास न थी। शैख़ परेशान थे कि क्या करें ? इतने में एक ऊंचे मकान से बच्ची ने देखा तो कहने लगी : ''या शैख़ ! आप वोही **हैं** ना, जिन की नेकियों का बड़ा चरचा है, इस के बा वुजूद आप परेशान हैं कि कूंएं से पानी किस त़रह़ निकालूं !'' फिर उस बच्ची ने कूंएं में अपना लुआ़ब (या'नी थूक) डाल दिया। थोड़ी ही देर में कूंएं का पानी बढ़ना शुरूअ़ हो गया ह़त्ता कि किनारों से निकल कर ज़मीन पर बहने लगा। शैख़ ने वुज़ू किया और उस बच्ची से कहने लगे : ''मैं तुम्हें क़सम दे कर पूछता हूं कि तुम ने येह **मर्तबा** कैसे ह़ासिल किया ?'' उस बच्ची ने जवाब दिया : ''मैं रसूले करीम, रऊफ़ुर्रह़ीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर कसरत से **दुरूदे पाक** पढ़ती हूं।'' येह सुन कर ह़ज़रते शैख़ सुलैमान जज़ूली رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने क़सम खाई कि मैं दरबारे रिसालत में पेश करने के लिये दुरूदो सलाम की किताब ज़रूर लिखूंगा। (मत़ालिउ़ मुसर्रात मुरजम, स. 33, 34) फिर आप ने ''**दलाइलुल ख़ैरात**'' नामी किताब तह़रीर फ़रमाई जो बहुत मशहूर हुई।

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

سُبْحٰنَ اللّٰه ! देखा आप ने म-दनी मुन्नों और मुन्नियों ! उस बच्ची को **मीठे मीठे आक़ा** صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर कसरत से दुरूदे पाक पढ़ने की वजह से कैसा अ़ज़ीम मर्तबा नसीब हुवा कि उस के लुआ़ब की ब-र-कत से कूंएं का पानी बढ़ गया, यहां इस बात का ख़याल रहे कि वोह बच्ची बा करामत थी इस लिये कूंएं में अपना लुआ़ब डाला, बहर ह़ाल हमें पानी के किसी ह़ौज़, तालाब या कूंएं में नहीं थूकना चाहिये। उस बच्ची की त़रह़ हमें भी अपने म-दनी आक़ा صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर ज़ियादा से ज़ियादा दुरूदे पाक पढ़ने की आ़दत बना लेनी चाहिये। हम चाहे खड़े हों, चल रहे हों, बैठे हों या लैटे हों, हमारी कोशिश येही होनी चाहिये कि हम दुरूद शरीफ़ पढ़ते रहें किउस के सवाब की कोई इन्तेहा नही। याद रखिये के दुरुदे पाक के मुख़्तलिफ अल्फ़ाज़ है आप कोई सा भी दुरूदे पाक पढ़ सक्ते हैं म-सलन : (1) صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم (2) صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد (3) الصلوة والسلام عليك يا رسول الله (4) صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم ।

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

सुन्नतों भरी तह़रीक ''दा'वते इस्लामी''

तब्लीग़े क़ुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक **दा'वते इस्लामी** के म-दनी काम का आग़ाज़ आज (या'नी सि. 1430 हि.) से तक़रीबन **29** साल पहले शैख़े त़रीक़त अमीरे अहले सुन्नत ह़ज़रत अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार** क़ादिरी र-ज़वी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه ने अपने चन्द रु-फ़क़ा के साथ किया। **दा'वते इस्लामी** का म-दनी पैग़ाम देखते ही देखते बाबुल इस्लाम (सिन्ध), पंजाब, सरह़द, कश्मीर, बलूचिस्तान

और फिर मुल्क से बाहर हिन्द, बंगलादेश, अ़रब अमारात, सीलंका, बरत़ानिया, ऑस्ट्रेलिया, कोरिया, जुनूबी अफ़्रीक़ा यहां तक कि (ता दमे तह़रीर) दुन्या के **66 से ज़ाइद मुमालिक** में पहुंच गया और आगे सफ़र जारी है। اَلْحَمْدُلِلّٰہِ عَزَّوَجَلَّ ! आज (या'नी सि. 1430 हि.) में **दा'वते इस्लामी** कमोबेश 40 शो'बों में सुन्नतों की ख़िदमत में मश्ग़ूल है।

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ **करम ऐसा करे तुझ पे जहां में**
ऐ दा'वते इस्लामी तेरी धूम मची हो

अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ ने थोड़ी सी मुद्दत में **दा'वते इस्लामी** के ज़रीए़ लाखों मुसल्मानों की ज़िन्दगी में इन्क़िलाब बरपा कर दिया। जहां आप دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ ने इस्लामी भाइयों और इस्लामी बहनों को अपने शबो रोज़ **रिज़ाए रब्बुल अनाम** عَزَّوَجَلَّ के कामों में गुज़ारने का ज़ेह्न दिया वहीं **म-दनी मुन्नों** और मुन्नियों की त-रबिय्यत का भी सामान किया चुनान्चे बाबुल मदीना कराची के **मदारिसुल मदीना** में (ता दमे तह़रीर या'नी 2009 ई. में) **50,000** से ज़ाइद म-दनी मुन्ने और मुन्नियां **ह़िफ़्ज़ व नाज़िरा** की ता'लीम के साथ साथ **अख़्लाक़ी तरबिय्यत** भी ह़ासिल कर रहे हैं।

अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ ने एक मर्तबा **दा'वते इस्लामी** की मजलिस अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या को इस त़रह़ इर्शाद फ़रमाया कि "बच्चों को म-दनी ज़ेह्न देने के लिये "**बच्चों की ह़िकायात**" के नाम से अस्लाफ़े किराम رَحِمَہُمُ اللّٰہُ السَّلَام के सबक़ आमोज़ वाक़िआ़त पर मुश्तमिल रसाइल शाएअ़ करने की तरकीब कीजिये।" आप دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ के हुक्म

की ता'मील में इस मौज़ूअ़ पर काम शुरूअ़ कर दिया गया। चुनान्चे 11 मुन्तख़ब वाक़िआ़त पर मुश्तमिल **''बच्चों की हिकायात''** (हिस्सा 1) **''नूर का खिलौना''** मक-त-बतुल मदीना से शाएअ़ किया जा रहा है। चूंकि येह रिसाला बच्चों के लिये है इस लिये इसे आसान अन्दाज़ में लिखने की कोशिश की गई है। हर इस्लामी भाई और इस्लामी बहन को भी चाहिये कि इन रसाइल का न सिर्फ़ ख़ुद मुता-लआ़ फ़रमाएं बल्कि अपने बच्चों को भी शफ़्क़त व महब्बत से पढ़ने की तरग़ीब दें और दीगर म-दनी मुन्नों और मुन्नियों को भी तोहफ़्तन पेश कर के सवाब का अनमोल ख़ज़ाना जम्अ़ करें।

अल्लाह तआ़ला हमें **''अपनी और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश''** के मुक़द्दस जज़्बे के तहूत **म-दनी इन्आ़मात** पर अ़मल और **म-दनी क़ाफ़िलों** का मुसाफ़िर बनते रहने की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमाए और **दा'वते इस्लामी** की तमाम मजालिस ब शुमूल मजलिसे **अल मदीनतुल इल्मिय्या** को दिन पच्चीसवीं रात छब्बीसवीं तरक़्क़ी अ़ता फ़रमाए।

اٰمین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صلی اللہ تعالیٰ علیہ واٰلہٖ وسلم

शो'बए इस्लाही कुतुब, मजलिसे अल मदीनतुल इल्मिय्या (दा'वते इस्लामी)

29 रबीउ़न्नूर सि. 1430 हि., 27 मार्च सि. 2009 ई.

ग़ुस्सा रोकने की फ़ज़ीलत

ह़दीसे पाक में है : जो शख़्स अपने ग़ुस्से को रोकेगा **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ क़ियामत के रोज़ उस से अपना अ़ज़ाब रोक देगा। (शु-अबुल ईमान, जि. 6, स. 315, ह़दीस : 8311)

(1) नूर का खिलौना

हज़रते सय्यिदुना अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि आप ने **रसूले अकरम, नूरे मुजस्सम** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से अ़र्ज़ की : **''या रसूलल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! मुझे तो आप की नुबुव्वत की निशानियों ने आप के दीन में दाख़िल होने की दा'वत दी थी, मैं ने देखा कि आप (बचपन में) गहवारे (या'नी झूले) में **चांद से बातें करते** और अपनी उंगली से उस की जानिब इशारा करते तो जिस त़रफ़ **आप** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم इशारा फ़रमाते चांद उस जानिब झुक जाता।'' हुज़ूरे पुरनूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : **''मैं चांद से बातें करता था और चांद मुझ से बातें करता था और वोह मुझे रोने से बहलाता था और जब चांद अ़र्शे इलाही के नीचे सज्दा करता, उस वक़्त मैं उस की तस्बीह़ करने की आवाज़ सुना करता था।''**

(अल ख़साइसुल कुब्रा, जि. 1, स. 91)

चांद झुक जाता जिधर उंगली उठाते महद[1] में
क्या ही चलता था इशारों पर खिलौना नूर का

म-दनी मुन्नों और म-दनी मुन्नियों ! आप ने मुला-हज़ा फ़रमाया कि हमारे **आक़ा** मक्की म-दनी मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को **अल्लाह** तआ़ला ने कैसी कुव्वत अ़त़ा फ़रमाई थी कि आप बचपन में इशारे से चांद को जिधर चाहते ले जाते थे। जब ए'लाने नुबुव्वत के

1 : या'नी झूला

बा'द तक़रीबन 48 बरस की उ़म्र में कुफ़्फ़ारे मक्का ने आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से चांद को दो टुकड़े कर के दिखाने का मुत़ा–लबा किया तो भी आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने **इशारे से चांद को चाक कर के दिखा दिया था ।**

(मदारिजुन्नुबुव्वत, जि. 1, स. 181)

चांद इशारे का हिला, हुक्म का बांधा सूरज
वाह ! क्या बात शहा ! तेरी तुवानाई की

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर दुरूदें हों और उन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

(2) मैं खेलकूद के लिये पैदा नहीं हुवा

ह़ज़रते सय्यिदुना यह़या عَلَیْہِ السَّلَام को अल्लाह तआ़ला ने बचपन में ही नुबुव्वत अ़त़ा फ़रमा दी थी चुनान्चे इर्शादे बारी तआ़ला है :

وَاٰتَیْنٰهُ الْحُكْمَ صَبِیًّا ﴿۱۲﴾

तर–ज–मए कन्ज़ुल ईमान : और हम ने उसे बचपन ही में नुबुव्वत दी ।

(पारह : 16, मरयम : 12)

उस वक़्त आप عَلَیْہِ السَّلَام की उ़म्र शरीफ़ 3 साल थी । इतनी सी उ़म्र में आप की अ़क़्ल व दानिश कमाल की थी । इस कम उ़म्री के ज़माने में बच्चों ने आप عَلَیْہِ السَّلَام से कहा : ''आप हमारे साथ खेलकूद क्यूं नहीं करते ?'' तो आप ने फ़रमाया कि ''**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने मुझे

खेलकूद के लिये पैदा नहीं फ़रमाया।'' (मदारिजुन्नुबुव्वत, जि. 1, स. 31)

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ **की उन पर रहमत हो और उन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो** اٰمین بِجاہِ النَّبِیِّ الاَمین صلی اللہ تعالیٰ علیہ واٰلہٖ وسلم

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

म-दनी मुन्नो और मुन्नियो ! खेलकूद में अपना वक़्त बरबाद करना अ़क़्ल मन्दी नहीं। हमारी ज़िन्दगी के लम्हात गोया **अनमोल हीरे** हैं अगर हम ने इन्हें बेकार ज़ाएअ़ कर दिया तो ह़सरत व नदामत के सिवा कुछ हाथ न आएगा। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने इन्सान को अपनी इ़बादत के लिये पैदा फ़रमाया है। इन्सान को इस दुन्या में बहुत **मुख़्तसर** से वक़्त के लिये रहना है और इस वक़्फ़े में इसे क़ब्र व ह़श्र के त़वील तरीन मुआ़-मलात के लिये तय्यारी करनी है लिहाज़ा इन्सान का वक़्त बेह़द क़ीमती है। काश ! हमें एक एक सांस की क़द्र नसीब हो जाए कि कहीं कोई सांस बे फ़ाएदा न गुज़र जाए और कल बरोज़े क़ियामत ज़िन्दगी का ख़ज़ाना नेकियों से ख़ाली पा कर अश्के नदामत (या'नी शरमिन्दगी के आंसू) न बहाने पड़ जाएं ! वक़्त एक तेज़ रफ़्तार गाड़ी की त़रह़ फ़र्राटे भरता हुवा जा रहा है न रोके रुकता है न पकड़ने से हाथ आता है, जो सांस एक बार ले लिया वोह पलट कर नहीं आता।

गया वक़्त फिर हाथ आता नहीं
सदा ऐ़शे दौरां दिखाता नहीं

सद करोड़ काश ! एक एक लम्हे का हिसाब करने की आ़दत पड़ जाए कि कहां बसर हो रहा है, ज़हे मुक़द्दर ! ज़िन्दगी का एक एक लम्हा मुफ़ीद कामों ही में सर्फ़ हो। बरोज़े क़ियामत अवक़ात को फ़ुज़ूल बातों, ख़ुश गप्पियों में गुज़रा हुवा पा कर कहीं कफ़े अफ़्सोस मलते न रह जाएं ! **आह ! ऐ कमज़ोर व ना तुवां म-दनी मुन्नो और मुन्नियो !** क़ियामत के उस कड़े वक़्त से अपने दिल को डराइये और हर वक़्त अपने तमाम आ'ज़ाए बदन को गुनाहों की मुसीबत से बाज़ रखने की कोशिश फ़रमाइये।

जन्नत में दरख़्त लगवाइये !

वक़्त की अहम्मिय्यत का इस बात से अन्दाज़ा लगाया जा सकता है कि अगर आप चाहें तो इस दुन्या में रहते हुए सिर्फ़ एक सेकन्ड में जन्नत के अन्दर एक दरख़्त लगवा सकते हैं और जन्नत में दरख़्त लगवाने का त़रीक़ा भी निहायत ही आसान है चुनान्चे एक ह़दीसे पाक के मुत़ाबिक़ इन चारों कलिमात में से जो भी कलिमा कहें जन्नत में एक दरख़्त लगा दिया जाएगा। वोह कलिमात येह हैं :

(1) سُبْحٰنَ اللّٰه (2) اَلْحَمْدُلِلّٰهِ (3) لَااِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ (4) اَللّٰهُ اَكْبَرُ (सु-ननेइब्ने माजह, जि. 4, स. 252, ह़दीस : 3807, दारुल मा'रिफ़ह बैरूत)

आसान काम

देखा आप ने ! जन्नत में दरख़्त लगवाना किस क़दर आसान है ! अगर बयान कर्दा चारों कलिमात में से एक कलिमा कहें तो एक और अगर चारों कह लेंगे तो जन्नत में 4 दरख़्त लग जाएंगे। अब आप ही ग़ौर फ़रमाइये कि वक़्त कितना क़ीमती है कि ज़बान को मा'मूली सी ह़-र-कत देने से जन्नत में दरख़्त लग जाते हैं तो ऐ काश ! फ़ालतू बातों की जगह سُبْحٰنَ اللّٰه का विर्द कर के हम जन्नत में बे शुमार दरख़्त लगवा लिया करें।

अपना जदवल बना लीजिये

कोशिश कीजिये कि सुब्ह़ उठने के बा'द से ले कर रात सोने तक सारे कामों के अवक़ात मुक़र्रर हों म-सलन इतने बजे **तहज्जुद,** इल्मी मशाग़िल, मस्जिद में तक्बीरे ऊला के साथ बा जमाअ़त नमाज़े फ़ज्र (इसी त़रह़ दीगर नमाज़ें भी) इश्राक़, चाश्त, नाश्ता, मद्रसे में पढ़ाई, दो पहर का खाना, घरेलू मुआ़-मलात, शाम के मशाग़िल, अच्छी सोह़बत, (अगर मुयस्सर न हो तो तन्हाई इस से कहीं बेहतर है), इस्लामी भाइयों से दीनी ज़रूरियात के तह़्त मुलाक़ात, वग़ैरा के अवक़ात मुक़र्रर कर लिये जाएं। जो इस के आ़दी नहीं हैं उन के लिये हो सकता है शुरूअ़ में कुछ दुश्वारी पेश आए। फिर जब आ़दत पड़ जाएगी तो इस की ब-र-कतें भी ख़ुद ही ज़ाहिर हो जाएंगी। اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ

दिन लह्व[1] में खोना तुझे शब सुब्ह तक सोना तुझे
शर्मे नबी ख़ौफ़े ख़ुदा येह भी नहीं वोह भी नहीं
रिज़्क़े ख़ुदा खाया किया फ़रमाने ह़क़ टाला किया
शुक्रे करम तरसे जज़ा[2] येह भी नहीं वोह भी नहीं

(ह़दाइक़े बख़्शिश) (माख़ूज़ अज़ अनमोल हीरे, मत़्बूआ़ मक-त-बतुल मदीना)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

(3) छोटी मुसीबत ने बड़ी मुसीबत से बचा लिया

एक मर्तबा ह़ज़रते सय्यिदुना लुक़्मान ह़कीम رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने अपने बेटे को (नसीह़त करते हुए) फ़रमाया : "ऐ मेरे प्यारे बेटे ! जब भी तुझे कोई मुसीबत पहुंचे तो तू उसे अपने ह़क़ में बेहतर जान और येह बात दिल में बिठा ले कि मेरे लिये इसी में भलाई है।" बेटे ने अ़र्ज़ की : "येह बात मेरे बस में नहीं कि मैं हर मुसीबत को अपने लिये बेहतर समझूं, मेरा यक़ीन अभी इतना पुख़्ता नहीं हुवा।" ह़ज़रते सय्यिदुना लुक़्मान ह़कीम رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने फ़रमाया : "ऐ मेरे बेटे ! **अल्लाह** عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام عَزَّوَجَلَّ ने दुन्या में वक़्तन फ़ वक़्तन अम्बियाए किराम भेजे, हमारे ज़माने में भी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने नबी عَلَيْهِ السَّلَام को भेजा है। आओ, हम उन से फ़ैज़याब होने चलते हैं, उन की बातें सुन कर तेरे यक़ीन को तक़्विय्यत (या'नी मज़्बूती) ह़ासिल होगी।" चुनान्चे सामाने सफ़र लिया, और ख़च्चरों पर सुवार हो कर दोनों रवाना हो गए। दौराने

1 : फ़ालतू काम 2 : अनजाम का ख़ौफ़

सफ़र एक वीरान जंगल में दो पहर हो गई, ऐसे में पानी और खाना वग़ैरा भी ख़त्म हो चुका था, ख़च्चर भी थकन और प्यास की शिद्दत से हांपने लगे, ह़ज़रते सय्यिदुना लुक़्मान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْمَنّان और आप का बेटा ख़च्चरों से उतर कर पैदल ही चल पड़े, बहुत दूर एक साया और धुवां सा नज़र आया, आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه आबादी का गुमान कर के उसी त़रफ़ बढ़ने लगे। रास्ते में आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه के बेटे को ठोकर लगी और पाउं में एक हड्डी इस त़रह़ घुसी कि तल्वे से पार हो कर ज़ाहिर क़दम तक निकल आई और वोह दर्द की शिद्दत से बेहोश हो कर ज़मीन पर गिर पड़ा। शफ़्क़त के सबब रोते हुए आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने अपने दांतों से खींच कर हड्डी निकाली। अपने मुबारक इ़मामे से कुछ कपड़ा फाड़ा और ज़ख़्म पर बांध दिया। ह़ज़रते सय्यिदुना लुक़्मान رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه के आंसू जब बेटे के चेहरे पर गिरे तो उसे होश आ गया, कहने लगा : ''अब्बा जान ! आप तो फ़रमा रहे थे कि हर **मुसीबत में भलाई है।** लेकिन अब रोने क्यूं लगे ?'' फ़रमाया : ''प्यारे बेटे ! बाप का अपनी औलाद के दुख दर्द की वजह से ग़मगीन हो जाना और रो पड़ना एक फ़ित्री अ़मल है, बाक़ी रही येह बात कि इस मुसीबत में तुम्हारे लिये क्या भलाई है ? तो हो सकता है इस **छोटी मुसीबत** में मुब्तला कर के तुझ से कोई बहुत बड़ी मुसीबत दूर कर दी गई हो। जवाब सुन कर बेटा ख़ामोश हो गया। फिर ह़ज़रते सय्यिदुना लुक़्मान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْمَنّان ने सामने नज़र की तो अब वहां न तो धुवां था और न ही साया वग़ैरा। **चित्कुबरे** घोड़े

(या'नी सफ़ेद व सियाह रंग के घोड़े) पर सुवार एक शख़्स बड़ी तेज़ी से बढ़ा चला आ रहा है, वोह सुवार क़रीब आ कर अचानक नज़रों से ओझल हो गया ! और आवाज़ आने लगी : मेरे रब عَزَّوَجَلَّ ने मुझे हुक्म फ़रमाया : मैं फुलां शहर और उस के बाशिन्दों को ज़मीन में **धंसा** दूं। मुझे ख़बर दी गई कि आप दोनों भी उसी शहर की त़रफ़ आ रहे हैं तो मैं ने अल्लाह عَزَّوَجَلَّ से दुआ़ की के वोह आप को उस शहर से दूर रखे। लिहाज़ा उस ने यूं इम्तिह़ान में डाला कि आप के बेटे के पाउं में हड्डी चुभ गई और इस त़रह़ आप दोनों इस **छोटी मुसीबत की वजह से एक बहुत बड़ी मुसीबत** (या'नी अ़ज़ाब वाले शहर की ज़मीन में धंसने) **से बच गए।**

फिर ह़ज़रते सय्यिदुना जिब्रईल عَلَيْهِ السَّلَام ने अपना मुबारक हाथ उस बेटे के ज़ख़्मी पाउं पर फैरा तो ज़ख़्म फ़ौरन **ठीक** हो गया। फिर खाने और पानी के ख़ाली शुदा बरतनों पर हाथ फैरा तो वोह दोनों **खाने** और **पानी** से भर गए। इस के बा'द ह़ज़रते सय्यिदुना जिब्रईल عَلَيْهِ السَّلَام ने दोनों बाप बेटे को सामान और सुवारियों समेत उठा लिया और आन की आन में येह अपने घर में मौजूद थे ह़ालां कि आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه का घर उस जंगल से काफ़ी दिन की मसाफ़त पर था। (उ़यूनुल ह़िकायात, स. 109)

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो اٰمین بِجاہِ النَّبِیِّ الاَمین صلی اللہ تعالیٰ علیہ واٰلہٖ وسلم

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

म-दनी मुन्नो ! इस ह़िकायत से मा'लूम हुवा कि हमें हर ह़ाल में **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा पर राज़ी रहना चाहिये। रब عَزَّوَجَلَّ की ह़िक्मत को समझने से हम क़ासिर हैं, उस के हर हर काम में ह़िक्मत होती है किसी को **मुसीबत** में मुब्तला करना भी ह़िक्मत तो किसी को बे त़लब **मुसीबत** से बचा लेना भी ह़िक्मत।

या इलाही عَزَّوَجَلَّ हर जगह तेरी अ़ता का साथ हो
जब पड़े मुश्किल शहे मुश्किल कुशा का साथ हो

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

(4) सब से पहले इस्लाम क़बूल करने वाला म-दनी मुन्ना

जब सरकारे मदीनए मुनव्वरह, सरदारे मक्कए मुकर्रमा صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने अपने नबी होने का इज़्हार फ़रमाया तो औ़रतों में सब से पहले **उम्मुल** मुअमिनीन ह़ज़रते **ख़दीजा** رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا आप صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर ईमान लाईं। कुछ दिन बा'द अमीरुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ली बिन अबू त़ालिब رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ जो रिश्ते में नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के चचाज़ाद भाई भी थे, (उस वक़्त आप رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ की उ़म्र तक़रीबन 10 साल थी) उन के यहां आए तो ताजदारे रिसालत, **माहे नुबुव्वत** صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم और उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते ख़दीजा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا को नमाज़ पढ़ते देखा। जब नमाज़ अदा कर चुके तो अ़र्ज़ की : "येह क्या है ?" रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने

इन्फ़िरादी कोशिश[1] करते हुए इर्शाद फ़रमाया : ''येह **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का वोह दीन है जो उस ने अपने लिये चुना और इसे फैलाने के लिये अपने रसूल भेजे, मैं तुम्हें **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ और उस की इबादत की त़रफ़ बुलाता हूं और लात[2] व उ़ज़्ज़ा[3] का इन्कार करने का कहता हूं ।'' ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ली رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने अ़र्ज़ की : ''येह बात तो मैं ने आज से पहले कभी नहीं सुनी इस लिये मैं अपने वालिद से मश्वरा किये बग़ैर कोई फ़ैसला नहीं कर सकता ।'' नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़िलह़ाल इस राज़ का ह़ज़रते अ़ली رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ के वालिद पर ज़ाहिर हो जाना पसन्द न फ़रमाया और इर्शाद फ़रमाया : ''ऐ अ़ली ! अगर तुम **इस्लाम** क़बूल नहीं कर रहे तो ख़ामोश रहना ।'' मगर उसी रात अल्लाह तआ़ला ने ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ली رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ के दिल में इस्लाम की मह़ब्बत डाल दी । चुनान्चे सुब्ह़ होते ही नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की बारगाह में ह़ाज़िर हो कर अ़र्ज़ की : ''आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने मुझ पर क्या पेश फ़रमाया था ?'' रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : **''तुम इस बात की गवाही**

1 : हर एक को अलग से नेकी की दा'वत देने (या'नी उसे समझाने) को **''इन्फ़िरादी कोशिश''** कहते हैं ।

2 : तीन मशहूर बुतों में से एक बुत का नाम है जो अ़रब शरीफ़ के शहर त़ाइफ़ में था और क़बीला बनी सक़ीफ़ उस की इबादत करता था । (अरौंजुल अनफ़, जि. 1, स. 174)

3 : येह नख़्ला के मक़ाम पर एक बुत था जिसे मुश्रिकीने अ़रब पूजते थे ।

(अरौंजुल अनफ़, जि. 1, स. 174)

दो कि अल्लाह के सिवा कोई मा'बूद नहीं, वोह एक है, उस का कोई शरीक नहीं और लात व उ़ज़्ज़ा का इन्कार कर दो और अल्लाह तआ़ला का मिस्ल मानने से बरी हो जाओ ।'' ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ली رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने इन बातों को मानते हुए इस्लाम क़बूल कर लिया । (उसुदुल ग़ाबह, बाबुल ऐन वल्लाम, जि. 4, स. 101)

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ **की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो** اٰمین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صلی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلم

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

म-दनी मुन्नो ! ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा كَرَّمَ اللّٰہُ تَعَالٰی وَجْہَہُ الْکَرِیْم की **ह़िकायत** में आप ने देखा कि म-दनी मुन्ने पर **इन्फ़िरादी कोशिश** कर के आक़ा صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने किस त़रह़ उन का म-दनी ज़ेह्न बनाया और शेरे ख़ुदा ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ली رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने इस्लाम क़बूल कर लिया । यक़ीनन नेकी की दा'वत के काम में इन्फ़िरादी कोशिश को बड़ा अ़मल दख़्ल है, हमारे मीठे मीठे आक़ा, मदीने वाले मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم नीज़ सब के सब अम्बियाए किराम عَلَیْہِمُ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام ने **नेकी की दा'वत** के काम में **इन्फ़िरादी कोशिश** फ़रमाई है । म-दनी मुन्नो ! आप भी **दा'वते इस्लामी** के म-दनी कामों के लिये इन्फ़िरादी कोशिश कीजिये और सवाब का ख़ज़ाना इकठ्ठा कीजिये ।

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

(5) म-दनी मुन्ने का जोशे ईमानी

रात का पिछला पहर था, सारे का सारा मदीना नूर में डूबा हुवा था। **अहले मदीना** रह़मत की चादर ओढ़े मह़वे ख़्वाब थे, इतने में मुअज़्ज़िने रसूल ह़ज़रते सय्यिदुना बिलाले ह़ब्शी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ की पुरकैफ़ सदा मदीनए मुनव्वरह की गलियों में गूंज उठी :

''**आज** नमाज़े फ़ज्र के बा'द मुजाहिदीन की फ़ोज एक अ़ज़ीम मुहिम पर रवाना हो रही है। **मदीनए मुनव्वरह** की मुक़द्दस बीबियां अपने शहज़ादों को जन्नत का दूल्हा बना कर फ़ौरन दरबारे रिसालत में ह़ाज़िर हो जाएं।''

एक बेवा सह़ाबिया رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا अपने **छ[6] सालह** यतीम शहज़ादे को पहलू में लिटाए सो रही थीं। ह़ज़रते सय्यिदुना **बिलाल** رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ का ए'लान सुन कर चौंक पड़ीं! दिल का ज़ख़्म हरा हो गया, यतीम बच्चे के वालिदे गिरामी गुज़श्ता बरस **ग़ज़्वए** बद्र में शहीद हो चुके थे। एक बार फिर श-जरे इस्लाम की आबयारी के लिये ख़ून की ज़रूरत दरपेश थी मगर उन के पास **छ[6] सालह म-दनी मुन्ने** के इ़लावा कोई और न था। सीने में थमा हुवा तूफ़ान आंखों के ज़रीए उमंड आया। आहों और सिस्कियों की आवाज़ से **म-दनी मुन्ने** की आंख खुल गई, मां को रोता देख कर बे क़रार हो कर कहने लगा : मां! क्यूं रोती हो? मां **म-दनी मुन्ने** को अपने दिल का दर्द किस त़रह़ समझाती! उस के रोने की आवाज़ मज़ीद तेज़ हो गई। मां की गिर्या व ज़ारी के

तअस्सुर से **म-दनी मुन्ना** भी रोने लग गया। मां ने **म-दनी मुन्ने** को बहलाना शुरूअ़ किया, मगर वोह मां का दर्द जानने के लिये बज़िद था। आख़िरे कार मां ने अपने जज़्बात पर ब कोशिश तमाम क़ाबू पाते हुए कहा **:** बेटा ! अभी अभी ह़ज़रते सय्यिदुना **बिलाल** رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने ए'लान किया है, ''मुजाहिदीन की फ़ोज मैदाने जंग की त़रफ़ रवाना हो रही है। **आक़ाए नामदार** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने अपने जां निसार त़लब फ़रमाए हैं। कितनी ख़ुश क़िस्मत हैं वोह माएं जो आज नौ जवान शहज़ादों का नज़राना लिये दरबारे रिसालत में ह़ाज़िर हो कर अश्कबार आंखों से इल्तिजाएं कर रही होंगी। **या रसूलल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! हम अपने जिगर पारे आप के क़दमों पर निसार करने के लिये लाई हैं, **आक़ा !** हमारे अरमानों की ह़क़ीर क़ुरबानियां क़बूल फ़रमा लीजिये, **सरकार !** उ़म्र भर की मेह़नत वुसूल हो जाएगी।'' इतना कह कर मां एक बार फिर रोने लगी और भर्राई हुई आवाज़ में कहा **: काश !** मेरी गोद में भी कोई जवान बेटा होता और मैं भी अपना नज़रानए शौक़ ले कर आक़ा की बारगाह में ह़ाज़िर हो जाती। म-दनी मुन्ना मां को फिर रोता देख कर मचल गया और अपनी मां को चुप करवाते हुए **जोशे ईमानी** के जज़्बे के साथ कहने लगा **:** मेरी प्यारी मां ! मत रो, मुझी को पेश कर देना। मां बोली **: बेटा !** तुम अभी कमसिन हो, मैदाने जंग में दुश्मनाने ख़ूख़ार से पाला पड़ता है, तुम तलवार की काट बरदाश्त नहीं कर सकोगे। **म-दनी मुन्ने** की ज़िद के सामने बिल आख़िर मां को

हथियार डालने ही पड़े। नमाज़े फ़ज्र के बा'द मस्जिदे न-बवी शरीफ़ के बाहर मैदान में मुजाहिदीन का हुजूम हो गया। उन से फ़ारिग़ हो कर **सरकारे मदीना** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم वापस तशरीफ़ ला ही रहे थे कि एक पर्दा पोश ख़ातून पर नज़र पड़ी जो **अपने छ: सालह म-दनी मुन्ने** को लिये एक त़रफ़ खड़ी थी। नबिय्ये अकरम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने **ह़ज़रते सय्यिदुना बिलाल** رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ को आमद का सबब दरयाफ़्त करने के लिये भेजा। **सय्यिदुना बिलाल** رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ ने क़रीब जा कर निगाहें झुकाए आने की वजह दरयाफ़्त की। ख़ातून ने भर्राई हुई आवाज़ में जवाब दिया : आज रात के पिछले पहर आप ए'लान करते हुए मेरे ग़रीब ख़ाने के क़रीब से गुज़रे थे, ए'लान सुन कर मेरा दिल तड़प उठा। आह ! मेरे घर में कोई नौ जवान नहीं था जिस का नज़रानए शौक़ ले कर ह़ाज़िर होती फ़क़त मेरी गोद में येही एक **छ: सालह यतीम बच्चा** है जिस के वालिद गुज़श्ता साल **ग़ज़्वए बद्र** में जामे शहादत नोश कर चुके हैं मेरी ज़िन्दगी भर की पूंजी येही एक बच्चा है, जिसे **सरकारे आ़ली वक़ार** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के क़दमों पर निसार करने के लिये लाई हूं। **ह़ज़रते सय्यिदुना बिलाल** رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ ने प्यार से **म-दनी मुन्ने** को गोद में उठा लिया और बारगाहे रिसालत में पेश करते हुए सारा माजरा अ़र्ज़ किया। **सरकार** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने **म-दनी मुन्ने** पर बहुत शफ़्क़त फ़रमाई। मगर कमसिनी के सबब मैदाने

जिहाद में जाने की इजाज़त न दी। (माख़ूज़ अज़ जुल्फ़ो ज़न्जीर, स. 222, शब्बीर बिरादर्ज़, मर्कज़ुल औलिया लाहोर)

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ **की उन पर रहमत हो और उन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो** اٰمین بِجاہِ النَّبِیِّ الاَمین صلی اللہ تعالیٰ علیہ والہٖ وسلم

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

दुन्या के लिये तो वक़्त है मगर.....

म-दनी मुन्नो ! देखा आप ने म-दनी मुन्ने का **जोशे ईमानी ! अल्लाह** ! **अल्लाह** ! पहले की माएं **अल्लाह व रसूल** عَزَّوَجَلَّ وَصَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم और दीने इस्लाम से किस क़दर वालिहाना महब्बत करती थीं। जो लोग अपने जिगर पारों को बे वफ़ा दुन्या की दौलत के हुसूल की ख़ातिर अपने शहर से दूसरे शहर बल्कि दूसरे मुल्क तक में और वोह भी बरसों के लिये भेजने के लिये तय्यार हो जाते हैं मगर अपने ही शहर में होने वाले **दा'वते इस्लामी** के हफ़्तावार सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़ में थोड़ी देर के लिये भी जाने से रोक देते हैं, सुन्नतों की तरबिय्यत की ख़ातिर म-दनी क़ाफ़िलों में आ़शिक़ाने रसूल के हमराह चन्द रोज़ सफ़र करने से मन्अ़ करते हैं, उन को इस **ईमान अफ़रोज़ हिकायत** से दर्से इ़ब्रत हासिल करना चाहिये। **आह !** हम थोड़े से वक़्त की क़ुरबानी देने से भी कतराते हैं और हमारे अस्लाफ़ अपना जान व माल सब कुछ **राहे ख़ुदा** عَزَّوَجَلَّ में क़ुरबान करने के लिये हर पल तय्यार रहते थे।

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

(7) म-दनी मुन्ने का रोना काम आ गया !

मशहूर सह़ाबी ह़ज़रते सा'द बिन अबी वक़्क़ास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ के छोटे भाई ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मैर बिन अबी वक़्क़ास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ जो अभी नौ उ़म्र ही थे ग़ज़्वए बद्र के मौक़अ़ पर फ़ोज की तय्यारी के वक़्त इधर उधर छुपते फिर रहे थे। ह़ज़रते सय्यिदुना सा'द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं, मैं ने **तअ़ज्जुब** से पूछा, क्यूं छुपते फिर रहे हो ? कहने लगे, कहीं ऐसा न हो कि मुझे सरकार صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم देख लें और बच्चा समझ कर जिहाद पर जाने से मन्अ़ फ़रमा दें। भय्या ! मुझे राहे ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ में लड़ने का बड़ा शौक़ है। काश ! मुझे शहादत नसीब हो जाए। आख़िरे कार सरकारे नामदार صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की तवज्जोह में आ ही गए और उन को कम उ़म्री की वजह से मन्अ़ फ़रमा दिया। ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मैर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ग़-ल-बए शौक़ के सबब रोने लगे उन का आरज़ूए शहादत में **रोना काम आ गया** और ताजदारे रिसालत صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इजाज़त मर्ह़मत फ़रमा दी। जंग में शरीक हो गए और दूसरी आरज़ू भी पूरी हो गई कि उसी जंग में शहादत की सआ़दत भी नसीब हो गई। आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ के बड़े भाई ह़ज़रते सय्यिदुना सा'द बिन अबी वक़्क़ास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं मेरे भाई उ़मैर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ छोटे थे और तलवार बड़ी थी लिहाज़ा मैं उस की ह़माइल (या'नी तलवार रखने की जगह) के तस्मों में गिरहें लगा कर

ऊंची करता था। (अल इसाबा, जि. 4, स. 603, दारुल कुतुबुल इल्मिय्या बैरूत)

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रहमत हो और उन के सदके हमारी मग़्फ़िरत हो اٰمین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صلی اللہ تعالیٰ علیہ واٰلہٖ وسلم

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

म-दनी मुन्नो ! देखा आप ने ! बच्चा हो या बड़ा राहे खुदा عَزَّوَجَلَّ में जान कुरबान करना ही उन की ज़िन्दगी का मक्सद था। लिहाज़ा काम्याबी खुद आगे बढ़ कर उन के क़दम चूमती थी। हज़रते सय्यिदुना उमैर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ का जज़्बए जिहाद और शौके शहादत आप ने मुला-हज़ा फ़रमाया और बड़े भाई सय्यिदुना सा'द बिन अबी वक्क़ास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ के तआवुन के बारे में भी आप ने सुना। बेशक आज भी बड़ा भाई अपने छोटे भाई का और बाप अपने बेटे का तआवुन करता है मगर सिर्फ़ दुन्यवी मुआ-मलात में और फ़क़त दुन्यवी मुस्तक्बिल को रोशन करने की ग़रज़ से। अफ़्सोस ! हमारे पेशे नज़र सिर्फ़ दुन्या की चन्द रोज़ा ज़िन्दगी है जब कि सहाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان की निगाहों में आख़िरत की ज़िन्दगी की बहार थी। हम दुन्यवी आसाइशों पर निसार हैं और वोह उख़रवी राहतों के तलबगार थे। हम दुन्या की ख़ातिर हर तरह की मुसीबतें झेलने के लिये तय्यार रहते हैं और वोह आख़िरत की सुरखुरूई की आरज़ू में हर तरह की राहते दुन्या को ठोकर मार कर सख़्त मसाइब व आलाम और खून आशाम तलवारों तले भी मुस्कराते रहे।

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

(8) नाबीना म-दनी मुन्ने की बीनाई लौट आई

इमाम मुहम्मद बिन इस्माईल बुख़ारी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ الْبَارِی बचपन में **नाबीना** हो गए थे, उस वक़्त के मशहूर डॉक्टरों से इलाज करवाया गया लेकिन उन की आंखों की रोशनी वापस न आ सकी । आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ की वालिदा अल्लाह तआ़ला की बहुत ज़ियादा इबादत किया करती थीं, उन्हों ने रो रो कर अल्लाह तआ़ला की बारगाह में दुआ़ मांगी ''या अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ! मेरे बेटे की आंखें रोशन कर दे ।'' एक रात उन्हें ख़्वाब में अल्लाह तआ़ला के प्यारे नबी हज़रते इब्राहीम عَلَیْہِ السَّلَام की ज़ियारत हुई तो आप ने इर्शाद फ़रमाया : ''अल्लाह तआ़ला ने तुम्हारे रोने और कसरत से दुआ़ मांगने के सबब तुम्हारे बेटे की आंखें रोशन कर दी हैं ।'' सुब्ह जब इमाम बुख़ारी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ الْبَارِی बिस्तर से उठे तो उन की आंखें रोशन हो चुकी थीं । (अशि'अ़तुल्लम्आ़त, जि. 1, स. 10)

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो اٰمین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صلی اللہ تعالیٰ علیہ واٰلہٖ وسلم

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

म-दनी मुन्नो ! हमें भी अपने वालिदैन की ख़ूब ख़िदमत कर के उन की दुआ़एं लेनी चाहियें ।

(9) मां की नसीह़त मानने का सिला

सरकारे बग़्दाद, हुज़ूरे ग़ौसे पाक رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं कि ''मैं इ़ल्मे दीन ह़ासिल करने के लिये जीलान से बग़्दाद क़ाफ़िले के

साथ रवाना हुवा, जब हमदान से आगे पहुंचे तो साठ (60) डाकू क़ाफ़िले पर टूट पड़े और सारा क़ाफ़िला लूट लिया लेकिन किसी ने मुझे कुछ न कहा, एक डाकू मेरे पास आ कर पूछने लगा : ऐ लड़के ! तुम्हारे पास भी कुछ है ? मैं ने जवाब में कहा, हां। डाकू ने कहा : क्या है ? मैं ने कहा : ''चालीस सोने के सिक्के।'' उस ने पूछा कहां हैं ? मैं ने कहा : ''क़मीस के अन्दर।'' डाकू इस बात को **मज़ाक़** समझता हुवा चला गया, उस के बा'द दूसरा डाकू आया और उस ने भी इसी त़रह़ के सुवालात किये और मैं ने येही जवाबात उस को भी दिये और वोह भी इसी त़रह़ मज़ाक़ समझते हुए चलता बना। जब सब डाकू अपने सरदार के पास जम्अ़ हुए और उन्हों ने अपने सरदार को मेरे बारे में बताया तो मुझे वहां बुला लिया गया, वोह **माल** तक़्सीम करने में मस्रूफ़ थे। डाकूओं का सरदार मुझ से कहने लगा : तुम्हारे पास क्या है ? मैं ने कहा : चालीस सोने के **सिक्के** हैं। सरदार ने डाकूओं को हुक्म देते हुए कहा : इस की तलाशी लो। तलाशी लेने पर जब सोने के सिक्के निकले तो उस ने ह़ैरान हो कर सुवाल किया ''तुम्हें सच बोलने पर किस चीज़ ने आमादा किया ?'' मैं ने कहा : वालिदए माजिदा की **नसीह़त** ने। सरदार बोला : वोह नसीह़त क्या है ? मैं ने कहा : ''मेरी वालिदए मोह़तरमा ने मुझे हमेशा **सच** बोलने की ताकीद फ़रमाई थी और मैं ने उन से वा'दा किया था कि सच बोलूंगा।'' **येह** सुन कर डाकूओं का सरदार रो कर कहने लगा : इस बच्चे ने अपनी मां से किया हुवा वा'दा नहीं

तोड़ा और मैं ने सारी उ़म्र अपने रब عَزَّوَجَلَّ से किये **वा'दे** के ख़िलाफ़ गुज़ार दी है ! उसी वक़्त सरदार और उस के साठ (**60**) डाकूओं ने **तौबा** की और क़ाफ़िले का लूटा हुवा माल वापस कर दिया।"

(बह्जतुल अस्रार, ज़िक्रे त़रीक़ा رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه, स. 168)

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो اٰمین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صلی اللہ تعالی علیہ والہ وسلم

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

म-दनी मुन्नो ! देखा आप ने कि मां का हुक्म मानने और सच बोलने की ब-र-कत से न सिर्फ़ मुसाफ़िर (या'नी ग़ौसे आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْهُ) की रक़म मह़फ़ूज़ रही बल्कि लोगों का माल लूटने वाले डाकू आप के हाथ पर तौबा कर के नेक बन गए। हमें भी चाहिये कि मां बाप का हर वोह हुक्म फ़ौरन मान लिया करें जो शरीअ़त से न टकराता हो और सच बोलना अपनी आ़दत बना लें।

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

(10) कमसिन मुबल्लिग़ की इन्फ़िरादी कोशिश

एक उस्ताज़ साहिब मद्रसे में ह़स्बे मा'मूल बच्चों को सबक़ पढ़ा रहे थे जिन में इ़ल्मी घराने से तअ़ल्लुक़ रखने वाला एक **म-दनी मुन्ना** भी शामिल था। उस की हर अदा में **वक़ार** और **सलीक़ा** था। उस के दिल की नूरानियत चेहरे से ज़ाहिर हो रही थी। सुरमगीं चमकती हुई आंखें उस की **ज़हानत व फ़त़ानत** की ख़बर दे रही थीं। वोह बड़ी

तवज्जोह से अपना सबक़ पढ़ रहा था। इतने में एक बच्चे ने आ कर सलाम किया। उस्ताज़ साहिब के मुंह से निकल गया : "जीते रहो।" येह सुन कर म-दनी मुन्ना चौंका और कुछ यूं अ़र्ज़ की : "उस्ताज़े मोहतरम ! सलाम के जवाब में तो وَعَلَيْكُمُ السَّلَام कहना चाहिये !" उस्ताज़ साहिब **कमसिन मुबल्लिग़** की ज़बान से इस्लाही जुम्ला सुन कर नाराज़ न हुए बल्कि **ख़ैर ख़्वाही** करने पर **ख़ुशी** का इज़्हार फ़रमाया और अपने उस होनहार शागिर्द को ढेरों **दुआ़एं** दी।

(मुलख़्ख़सन ह़याते आ'ला ह़ज़रत, जि. 1, स. 63)

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ **की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो** اٰمین بِجاہِ النَّبِیِّ الاَمین صلی اللہ تعالیٰ علیہ واٰلہٖ وسلم

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

बरेली का कमसिन मुबल्लिग़

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! आप जानते हैं वोह **कमसिन मुबल्लिग़** कौन था ? वोह चौदहवीं सदी हिजरी के मुजद्दिदे दीनो मिल्लत, आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना इमाम **अह़मद रज़ा ख़ान** عَلَیْہِ رَحْمَۃُ الرَّحْمٰن थे। आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ की **विलादते** बा सआ़दत बरेली शरीफ़ (हिन्द) के मह़ल्ला जसौली में 10 शव्वाल सि. 1272 हि. बरोज़ ह़फ़्ता ब वक़्ते ज़ोहर मुत़ाबिक़ 14 जून 1856 ई. को हुई। **आ'ला ह़ज़रत** رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने सिर्फ़ तेरह साल दस माह चार दिन की उ़म्र में

मदारिसे इस्लामिया में राइज तमाम उ़लूम की तक्मील अपने वालिदे माजिद ह़ज़रत मौलाना **नक़ी अ़ली ख़ान** عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْمَنَّان से कर के स-नदे फ़राग़त ह़ासिल कर ली। उसी दिन आप ने एक सुवाल के जवाब में **पहला फ़तवा** (या'नी शर-ई हुक्म) तह़रीर फ़रमाया था। फ़तवा सह़ीह़ पा कर आप के वालिदे माजिद ने मस्नदे इफ़्ता आप के सिपुर्द कर दी और आख़िर वक़्त तक फ़तावा तह़रीर फ़रमाते रहे। आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه **55** से ज़ाइद **उ़लूम** पर उ़बूर रखने वाले ऐसे **माहिर आ़लिम** थे कि दरजनों उ़लूम पर आप की **सेंकड़ों तसानीफ़** मौजूद हैं, हर तस्नीफ़ में आप की **इल्मी वजाहत, फ़िक़्ही महारत और तह़क़ीक़ी बसीरत** के जल्वे दिखाई देते हैं, बिल ख़ुसूस **फ़तावा र-ज़विय्या** तो अपनी मिसाल आप है। **आप** رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने क़ुरआने मजीद का तरजमा किया जो उर्दू तराजिम में सब पर फ़ाइक़ है। आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه के तरजमा का नाम "**कन्ज़ुल ईमान**" है। जिस पर आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه के ख़लीफ़ा मौलाना सय्यिद **नईमुद्दीन मुराद आबादी** رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने ह़ाशिया **ख़ज़ाइनुल इरफ़ान** लिखा है। **25 स-फ़रुल मुज़फ़्फ़र सि. 1340 हि.** ब मुत़ाबिक़ सि. 1921 ई. को जुमुअ़तुल मुबारक के दिन हिन्दुस्तान के वक़्त के मुत़ाबिक़ 2 बज कर 38 मिनट पर, ऐन अज़ान के वक़्त उधर मुअज़्ज़िन ने **حَيَّ عَلَى الفَلَاح** कहा और इधर इमामे अहले सुन्नत, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना **इमाम अह़मद**

रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن ने विसाल फ़रमाया । **आप** رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه का **मज़ारे पुर अन्वार** बरेली शरीफ़ (हिन्द) में आज भी ज़ियारत गाहे ख़ास व आम बना हुवा है ।

डाल दी क़ल्ब में अ-ज़-मते मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم
सय्यिदी आ'ला رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه **हज़रत पे लाखों सलाम**

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

(11) बाबुल मदीना (कराची) का ख़ौफ़े ख़ुदा रखने वाला म-दनी मुन्ना

एक मर्तबा दौराने गुफ़्त-गू शैख़े त़रीक़त अमीरे अहले सुन्नत ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार** क़ादिरी र-ज़वी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه ने तरग़ीब के लिये इर्शाद फ़रमाया : ''जब मैं छोटा था तक़रीबन ना समझ ! ग़ुरबत और यतीमी का दौर था । हुसूले मआ़श के लिये भुने हुए चने और मूंग फलियां **छीलने** के लिये घर में लाई जाती थीं । एक सैर चने छीलने पर चार आने और एक सैर मूंग फलियां छीलने पर एक आना **मज़दूरी** मिलती । हम सब घर वाले मिल कर उसे छीलते । मैं ना समझी के बाइ़स कभी कभार चन्द दाने मुंह में डाल लेता और फिर परेशान हो कर वालिदए मोह़तरमा से अ़र्ज़ करता कि **मां ! मूंग फली वाले से मुआ़फ़ करा लेना ।** वालिदए मोह़तरमा सेठ से फ़रमातीं कि बच्चे दो दाने मुंह में डाल लेते हैं वोह कह देता, कोई बात नहीं । मैं फिर भी सोचता कि मैं ने तो दो दाने से ज़ियादा खाए हैं

मगर मां ने सिर्फ़ दो ही दाने मुआ़फ़ करवाए हैं ! बा'द में जब शुऊ़र आया तो पता चला कि **दो दाने** मुह़ावरा है और इस से मुराद थोड़े दाने ही हैं और मैं कभी **थोड़े दाने खा** लेता था।''

(अमीरे अहले सुन्नत की एह़तियातें, स. 26)

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

म-दनी मुन्नो ! देखा आप ने कि छोटी सी उ़म्र में **अमीरे अहले सुन्नत** دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه कैसी म-दनी सोच रखते थे। हमें भी चाहिये कि किसी की चीज़ बग़ैर इजाज़त न खाएं। बा'ज़ बच्चे ठेले वाले की नज़रों से बचा कर ठेले से चीज़ें चुरा कर खा लेते हैं, लोगों के घरों के सेह़न में लगे दरख़्तों से फल तोड़ कर खा लेते हैं, इसी त़रह़ कई त़रीक़ों से दूसरों की चीज़ बिला इजाज़त खा पी लेते हैं और इसे कोई बुराई नहीं समझते। ह़ालां कि ऐसा करने से बन्दों के ह़ुक़ूक़ तलफ़ (या'नी ज़ाएअ़) होते हैं जिस का क़ियामत के दिन **ह़िसाब** देना पड़ेगा और जब तक वोह मुसल्मान हमें मुआ़फ़ नहीं करेगा हमारी जान नहीं छूटेगी। इस लिये अगर कभी ऐसी ग़-लती हो भी जाए तो **मुआ़फ़ी** मांगने में देर नहीं करनी चाहिये। अल्लाह तआ़ला हमें परहेज़ गार बनने की तौफ़ीक़ अ़त़ा फ़रमाए, اٰمِين بِجَاهِ النَّبِيِّ الْاَمِين صلی اللہ تعالیٰ علیہ والہٖ وسلم

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

आप भी म-दनी माह़ोल से वाबस्ता हो जाइये

म-दनी मुन्नो ! ख़रबूज़े को देख कर ख़रबूज़ा रंग पकड़ता है, तिल को गुलाब के फूल में रख दो तो उस की सोह़बत में रह कर गुलाबी हो जाता है । इसी त़रह़ तब्लीग़े क़ुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक **दा'वते इस्लामी** के म-दनी माह़ोल से वाबस्ता हो कर आ़शिक़ाने रसूल की सोह़बत में रहने वाला **अल्लाह** और उस के रसूल عَزَّوَجَلَّ وَصَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّمْ की मेहरबानी से बे वक़्अ़त पत्थर भी **अनमोल हीरा** बन जाता, ख़ूब जगमगाता और ऐसी शान से दुन्या से जाता है कि देखने सुनने वाला उस पर रश्क करता और जीने के बजाए ऐसी मौत की आरज़ू करने लगता है । आप भी तब्लीग़े क़ुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक **दा'वते इस्लामी** के म-दनी माह़ोल से वाबस्ता हो जाइये । अपने शहर में होने वाले **दा'वते इस्लामी** के **हफ़्तावार सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़ और म-दनी क़ाफ़िलों** में अपने वालिद साह़िब या घर के बड़े के साथ शिरकत कीजिये और शैख़े त़रीक़त **अमीरे अहले सुन्नत** دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه के अ़त़ा कर्दा **म-दनी इन्आ़मात** पर अ़मल कीजिये, اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ आप को दोनों जहां की ढेरों भलाइयां नसीब होंगी ।

मक़्बूल जहां भर में हो दा'वते इस्लामी
सदक़ा तुझे ऐ रब्बे ग़फ़्फ़ार मदीने का

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

म-दनी मश्वरा

اَلْحَمْدُلِلّٰہِ عَزَّوَجَلَّ शैखे़ त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत ह़ज़रत अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी** र-ज़वी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه दौरे ह़ाज़िर की वोह यगानए रोज़गार हस्ती हैं कि जिन से श-रफ़े बैअ़त की ब-र-कत से लाखों मुसल्मान गुनाहों भरी ज़िन्दगी से ताइब हो कर **अल्लाहु** रह़मान عَزَّوَجَلَّ के अह़काम और उस के **प्यारे ह़बीबे लबीब** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की सुन्नतों के मुत़ाबिक़ पुर सुकून ज़िन्दगी बसर कर रहे हैं । ख़ैर ख़्वाहिये मुस्लिम के मुक़द्दस जज़्बे के तह़्त हमारा **म-दनी मश्वरा** है कि अगर आप अभी तक किसी जामेए़ शराइत़ पीर साह़िब से बैअ़त नहीं हुए तो शैखे़ त़रीक़त **अमीरे अहले सुन्नत** دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه के फ़ुयूज़ो ब-रकात से **मुस्तफ़ीद** होने के लिये इन से **बैअ़त** हो जाइये । اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ दुन्या व आख़िरत में काम्याबी व सुरख़ुरूई नसीब होगी ।

मुरीद बनने का त़रीक़ा

अगर आप मुरीद बनना चाहते हैं तो अपना और जिन को **मुरीद या त़ालिब** बनवाना चाहते हैं उन का नाम नीचे तरतीब वार बमअ़ वल्दिय्यत व उ़म्र लिख कर **''मजलिसे मक्तूबातो ता'वीज़ाते अ़त्तारिय्या म-दनी मर्कज़ दा'वते इस्लामी शाही मस्जिद शाहे आ़लम दरवाज़ा के सामने अह़मद आबाद गुजरात''** के पते पर रवाना

फ़रमा दें तो اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ उन्हें भी सिल्सिलए **क़ादिरिय्या र-ज़विय्या अ़त्तारिय्या** में दाख़िल कर लिया जाएगा। (पता अंग्रेज़ी के केपीटल हुरूफ़ में लिखें)

E.Mail : Attar@dawateislami.net

(1) नाम व पता बॉल पेन से और बिल्कुल साफ़ लिखें, ग़ैर मशहूर नाम या अल्फ़ाज़ पर लाज़िमन ए'राब लगाएं। अगर तमाम नामों के लिये एक ही पता काफ़ी हो तो दूसरा पता लिखने की ह़ाजत नहीं। **(2)** एड्रेस में मह़रम या सर परस्त का नाम ज़रूर लिखें। **(3)** अलग अलग मक्तूबात मंगवाने के लिये जवाबी लिफ़ाफ़े साथ ज़रूर इरसाल फ़रमाएं।

नम्बर शुमार	नाम	मर्द/ औ़रत	बिन/ बिन्ते	बाप का नाम	उ़म्र	मुकम्मल एड्रेस

म-दनी मश्वरा : इस फ़ॉर्म को मह़फ़ूज़ कर लें और इस की मज़ीद कॉपियां करवा लें।